रोल नं. | | | | | | | | |

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

001

201 (HWB)

2017
हिन्दी

समय : 3 घण्टे] [पूर्णांक : 100

निर्देश : (i) इस प्रश्न पत्र के **दो** खण्ड **'अ'** तथा **'ब'** हैं। दोनों खण्डों में पूछे गये सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(ii) उत्तर यथासम्भव क्रमवार लिखिए। प्रश्नों के अंक उनके सम्मुख अंकित हैं।

खण्ड – 'अ'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए – 2×5 = 10

धार्मिक शिक्षा के सन्दर्भ में धर्म को सीमित अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए। इसका अर्थ मानव–धर्म या विश्वधर्म है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव अपने में निहित रखता है। इसका अभिप्राय उस धर्म से है जो 'सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः' का सन्देश देता है। धर्म एक उच्च मानवीय अनुशासन है जो व्यक्ति को संस्कारवान् बनाता है। अतः शिक्षा के स्वरूप को परिष्कृत करने के लिए हम जिस नैतिक शिक्षा की बात करते हैं उसे धर्ममूलक सांस्कृतिक परिवेश से जोड़कर प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे अपने समृद्ध सांस्कृतिक अतीत से वर्तमान को जोड़कर छात्रों को आगे बढ़ते हुए जीवन की उच्चतर उपलब्धियों का बोध कराना संभव होगा।

धर्म, जगत् के अस्तित्व का आधार है। धर्म, व्यक्ति को सही मार्ग पर लाने में एकमात्र सहायक है। 'धर्मो हि जगदाधारः'। इसलिए सामाजिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचरण व अवमूल्यन से बचने के लिए शिक्षा में धार्मिक मूल्यों के समन्वयन की आवश्यकता है। धार्मिक संबोध के बिना व्यक्ति की शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। सीमित स्वार्थ के वशीभूत होकर व्यक्ति अत्यन्त जघन्य कर्म करने से नहीं चूकता। इस प्रकार के शत्–शत् उदाहरण आज हमें सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में देखने और सुनने को मिलते हैं। विभिन्न विषयों की शिक्षा विषय–ज्ञान बढ़ाती है किन्तु नैतिक मूल्यों की स्थापना धार्मिक संबोधों के माध्यम से ही कराई जा सकती है।

अपने शैक्षिक विचारों के अंतर्गत गाँधी जी ने धार्मिक शिक्षा को अन्य विषयों के बराबर महत्व दिया है। उनके विचार से भारत जैसे देश में जहाँ पर संसार के अधिकतम धर्मों के अनुयायी मिलते हैं, धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध कठिन होगा, लेकिन हिन्दुस्तान को आध्यात्मिकता का दिवाला नहीं निकालना हो तो उसे धार्मिक शिक्षा को भी विषयों के शिक्षण के बराबर महत्व देना पड़ेगा। वस्तुतः धर्म को जाने बिना विद्यार्थी जीवन का निर्दोष आनन्द नहीं ले सकते। तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर सफलता का शिखर चूमने वाले छात्र भी बहुधा सामाजिक व राष्ट्रीय सरोकारों के निर्वहन में पीछे रह जाते हैं।

(क) वास्तविक धर्म क्या है ?

(ख) धर्म किस प्रकार जगत् के अस्तित्व का आधार है ? स्पष्ट कीजिए।

(ग) अन्य विषयों की शिक्षा और धार्मिक शिक्षा में मुख्य अन्तर क्या है ?

(घ) धार्मिक शिक्षा के सन्दर्भ में गाँधी जी के क्या विचार थे ?

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

2. दिए गए संकेत–बिन्दुओं के आधार पर किसी <u>एक</u> विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए – 10

(क) वन रहेंगे – हम रहेंगे

(i) वनों का स्वरूप
(ii) वनों का मानव जीवन में महत्व
(iii) वन एवं पर्यावरण
(iv) राज्य में वनों की वर्तमान स्थिति
(v) वन संरक्षण के उपाय